P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# आधुनिकीकरण एवं विकास का सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था पर प्रभाव

**जयराम बैरवा**
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर

**सारांश**

मानव की स्थिति और नियति के बारे में आजकल जो बहस हो रही हैं, उसमें आधुनिकीकरण और विकास दो अवधारणाएं प्रमुख है अर्थात् दो बीज शब्द बन गये हैं। भिन्न बौद्धिक इतिहास होने पर भी लक्ष्यों को पुनर्परिभाषित करने और वैचारिक पृष्टभूमि तथा अध्ययन विधि दोनों ही दृष्टियों से एक दूसरे से अधिक मेल खाने के कारण अब ये वास्तविक अर्थ में एक–दूसरे के अधिक निकट भी आ गये हैं। दोनों की तीन सन्दर्भ बिन्दुओं में साझेदारी है। प्रथम, ये समाज की स्थिति की ओर इंगित करते हैं। आधुनिकीकरण को मानने वाले विचारक परम्परागत, संक्रमणकालिक, आधुनिकीकृत तथा उत्तर आधुनिकीकरण, समाजों में भेदभाव करते हैं। दूसरी, विकास की अवधारणा मानने वाले विचारक अविकसित, विकासशील, विकसित और वैश्वीकरण जैसे समाजों की चर्चा करते हैं। दूसरे दोनों ही ऐसे लक्ष्यों को रेखांकित करते हैं जो आधुनिकीकरण या विकास के आदर्श कार्यक्रमों की एक रूपरेखा सामने रखते हैं। तीसरे, दोनों ही अवधारणाऐं एक प्रक्रिया की और संकेत करती है– परम्परा से आधुनिकता की ओर या अविकसित स्थिति से विकास की दिशा में आगे बढ़ना है।

**मुख्य शब्द :** आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण, युगान्तरकारी परिवर्तन।

**प्रस्तावना**

आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में युगान्तरकारी परिवर्तन हुये है, जिसके चलते सामाजिक और आर्थिक जीवन में अनेक परिवर्तन और यह परिवर्तन निरन्तर रूप से विश्व स्तर पर आज भी चल रहा है। इस परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए समाज वैज्ञानिकों ने आधुनिकीकरण जैसी अवधारणा का प्रयोग किया है। आधुनिकीकरण की अवधारणा का प्रयोग विशेष तौर पर समाज में होने वोले परिवर्तनों या औद्योगिकीकरण के कारण पश्चिमी देशों में आये परिवर्तनों को समझने के लिए किया गया है। इसके साथ आधुनिकीकरण का प्रयोग उपनिवेशों एवं विकासशील देशों में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए भी किया गया है। इसी सन्दर्भ में कुछ समाजशास्त्रीयों ने आधुनिकीकरण को एक प्रक्रिया माना है, तो कुछ ने इसे प्रतिफल (Product) के रूप में स्वीकार किया है। आईजेनस्टॉड के शब्दों में ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण एक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया है जो 17वीं से 19वीं शताब्दी तक पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में और 20वीं शताब्दी तक दक्षिणी अमेरिका, एशियाई व अफ्रिका देशों में विकसित हुई है।

आधुनिकीकरण को विभिन्न सामाजिक वैज्ञानिकों ने विभिन्न रूपों से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस विषय पर विचारों में विभिन्नता के कारण बहुत सारी परिभाषाऐं देखने को मिलती है, लेकिन उन सभी परिभाषाओं से यही बात स्पष्ट होती हैं कि आधुनिकीकरण की अवधारणा का सम्बन्ध वैज्ञानिक मूल्यों से है। यह किसी समाज और संस्कृति के घेरे में बन्द नहीं है। आधुनिकीकरण के बहुत सारे आयाम है, इसे कई स्तरों पर देखा जाता है। जैसे व्यक्तिगत समूह एवं समस्त समाज। इसके अलावा हम बहुत किस्म की आधुनिकीकरण की भी बात करते हैं, जैसे– आर्थिक आधुनिकीकरण, राजनीतिक आधुनिकीकरण, सामाजिक आधुनिकीकरण, शैक्षणिक आधुनिकीकरण, प्रौद्योगिकी आधुनिकीकरण, प्रशासनिक आधुनिकीकरण इत्यादि।

**आधुनिकीकरण का अर्थ एवं परिभाषा**

अर्थशास्त्र के क्षेत्र में आधुनिकीकरण का प्रयोग प्राकृतिक संसाधनों का आधुनिक प्रौद्योगिकी के द्वारा समाज के आर्थिक लाभ के लिए दोहन के अर्थ में होता है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में आधुनिकीकरण का प्रयोग राष्ट्र निर्माण,

प्रजातांत्रिक मूल्यों के विकास, प्रशासनिक सुधारों एवं सत्ता के विकेन्द्रीकरण के अर्थ में होता है। दूसरी तरफ समाजशास्त्र के क्षेत्र में आधुनिकीकरण का प्रयोग समतामूलक समाज की स्थापना एवं जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के अर्थ में होता है। यह बात दीगर है कि आधुनिकीकरण से समाज में अशांति, क्षेत्रियता, जातिवाद, वर्ग–संघर्ष, मानसिक रोग, अपराध जैसी समस्याओं को अप्रत्यक्ष रूप से कभी–कभी बढ़ावा मिलता है। आईजेनस्टॉड ने बताया है कि आधुनिकीकरण वर्तमान समाज की बहुत प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक विशेषता है। विश्व का हर समाज कमोबेश इस स्वभाविक प्रक्रिया से गुजर रहा है।

आधुनिकता का सम्बन्ध एक खास तरह के अनुभव, एक विशेष प्रकार की संस्कृति से है, इसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गठबन्धन होता है जो इसे एक अलग पहचान देता है। आधुनिकता सांस्कृतिक एकाधिकता है जिसमें अनेक जातियॉ, भाषाये और संस्कृति क्षेत्र आते हैं। आधुनिकता में लचीलापन होता है और यह हमेशा नये आविष्कारों में जुड़ी रहती है। इस काल का सौन्दर्य बोध बड़ा परिष्कृत होता है। इसकी पॉप कल्चर जादुई होती है– इसे खान–पान, रहन–सहन, सभी में देखा जा सकता है। आधुनिकता एक प्रकार से औद्योगिक अर्थव्यवस्था का दर्पण होता है। यही आधुनिकता जब अत्यधिक विकसित हो जाती है, तब इसे उत्तरआधुनिकता कहते हैं। अब तो आधुनिकता की व्याख्या फास्ट–फूड, रेस्टोरेन्ट, क्रेडिट कार्ड, मोबाइल फोन, इन्टरनेट एवं डिजिटल आदि के सन्दर्भ में की जाने लगी है।

कुछ समाजशास्त्री आधुनिकीकरण को उसके संरचनात्मक पक्ष तक सीमित रखते हैं तो कुछ उसके सांस्कृतिक पहलू पर जोर देते हैं। समाजशास्त्रीयों ने आधुनिकता को निम्न सन्दर्भ में परिभाषित किया है।

प्रो.एम.एस.गोरे के अनुसार आधुनिकीकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। प्रारम्भ में आधुनिकीकरण शब्द का प्रयोग अर्थशास्त्र में परिवर्तन और सामाजिक मूल्यों एवं प्रथाओं पर इसके प्रभाव के संदर्भ में किया जाता था। ''इसका वर्णन ऐसी प्रक्रिया के रूप में किया जाता है जिसने समाज को प्रमुख रूप से कृषि प्रधान समाज से है, प्रमुख रूप से औद्योगिकी अर्थव्यवस्था में इस प्रकार परिवर्तन के परिणामस्वरूप समाज में मूल्यों, विश्वासों एवं मानदण्डों में भी परिवर्तन आने लगा है।'' आजकल आधुनिकीकरण शब्द को वृहद् अर्थ दिया जाता है। इसका एक ऐसा सामाजिक परिवर्तन माना जाता है जिसमें विज्ञान और तकनीकी के तत्व शामिल होते हैं।

गिडेन्स ने आधुनिकता की परिभाषा में चार बुनियादी संस्थागत आयाम के सन्दर्भ में करते है। इनका पहला आयाम पूंजीवाद है। इसके अन्तर्गत माल का उत्पादन, निजीकरण, दिहाडी करने वाले मजदूर आदि आते हैं। आधुनिकता का दूसरा आयाम उद्योगवाद है। इसमें प्रकृति की वस्तुओं से ऊर्जा प्राप्त की जाती हैं। इसके अन्तर्गत आवागमन के साधन, संचार व्यवस्था तथा घरेलु जीवन आ जाते हैं। तीसरा आयाम सैनिक शक्ति अर्थात् निगरानी रखने की क्षमता है।

**आधुनिकता के संस्थागत आयाम**

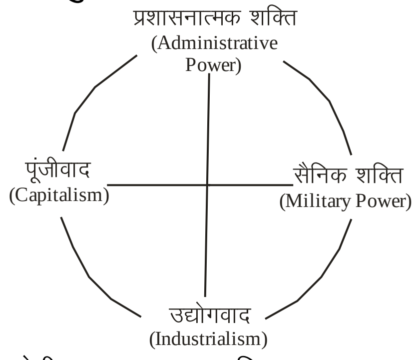


स्रोत : दोषी, एस.एल., आधुनिकता, उत्तरआधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धान्त।

इसमें राज्य नागरिकों पर ऑख रखती है। उन पर निगरानी रखती है। और इसका सरोकार सैनिक शक्ति से होता है। चौथी संस्थागत आयाम प्रशासनिक क्षेत्र में देखने को मिलता है अर्थात् राष्ट्र–राज्य (Nation State) है जो राज्य हिंसा के साधनों पर अपना नियंत्रण रखता है। इस प्रकार गिडेन्स के अनुसार इन चारों संस्थाओं का गठबन्धन ही आधुनिकता है।

एन्थोनी गिडेन्स आधुनिकता की चर्चा करते हुये लिखा है कि आधुनिक समाज को एक प्रकार का प्रतिबिम्ब समाज समझते है। इन समाज में समय व स्थान सिकुड़ जाते हैं। समय की सिकुडन इतनी अधिक है कि बिजली की गति से लोग एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं। देखते ही देखते लोग संचार साधनों से सम्पर्क कर लेते हैं, व्यापार का सौदा हो जाते है, साक्षात्कार कर लिए जाते हैं, यही स्थिति स्थान की है। पिता अपना काम मुम्बई में चलाता हैं, पुत्र चेन्नई में अध्ययन करता है और परिवार गाँव में रहता है। अब वह समय नहीं रहा है कि एक ही छत के नीचे रहकर और एक चूल्हे से बना भोजन करके लोग बतियाते हुये जीवन यापन करते थे या जीवन निकाल लेते थे। स्थान अब बहुत छोटा हो गया है, दूर रहकर भी पल–पल एक दूसरे से जुडे हुये है, यह आधुनिकता है।

गिडेन्स ने आधुनिकता के विश्लेषण की एक और कारक की बात की है। यह कारण समय–स्थान के साथ जुड़ा हुआ है। इसे आसन्निहित कारक कहते है। उनका कहना है कि परम्परागत लोग अपने समुदाय से जुड़े रहते थे, सभी लोग होली पर रंग छिड़कते है या त्योहार के समय मिठाईयॉ खाते हैं, तब समुदाय की इस परम्परा के अनुसार वह भी सब कुछ करता है, लेकिन आधुनिक समाज में यह सब कुछ नहीं होता है। लोग समुदाय से हटकर जीवन को बिताते है। यह आसन्निहितता है। समुदाय की जो जीवन पद्धति होती है वह आधुनिकता में पहुँचकर निजी जीवन का रूख ले लेता हैं।

डॉ. योगेन्द्र सिंह ने आधुनिकीकरण को एक सांस्कृतिक प्रत्यय के रूप में स्वीकार करते हैं। इसके अन्तर्गत उन्होंने तार्किक अभिवृत्ति, सार्वभौम, दृष्टिकोण परानुभूति, वैज्ञानिक विश्वदृष्टि, मानवता, प्रौद्योगिकी प्रगति आदि को सम्मिलित किया है।

एम. एन. श्रीनिवास ने आधुनिकीकरण को एक तटस्थ शब्द नहीं मानते हैं। उन्होंने आधुनिकीकरण के अन्तर्गत भौतिक संस्कृति, सामाजिक संस्थाओं तथा ज्ञान, मूल्य एवं मनोवृत्तियों के क्षेत्र में सम्मिलित किया है। डेनियल लर्नर के अनुसार आधुनिकीकरण के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रक्रियाएं एवं प्रवृत्तियां सम्मिलित हैं– 1. नगरीकरण में वृद्धि, 2. आधुनिक शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार, 3. संचार के साधनों में वृद्धि एवं अर्थ पूर्ण विचारों का अधिकतम आदान–प्रदान होना एवं 4. आर्थिक विकास एवं प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि।

लर्नर ने उपर्युक्त विशेषताओं को शक्ति, तरूणाई, निपुणता एवं तार्किकता के रूप में व्यक्त किया है। उन्होंने एक मनःस्थिति, प्रगति की अपेक्षा विकास की क्षमता,परिवर्तन होने की तत्परता एवं परानुभूति को आधुनिकीकरण का प्रमुख तत्व माना है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण एक बहु आयामी प्रक्रिया हैं। साथ ही यह किसी प्रकार के मूल्यों से जुड़ा नहीं है, लेकिन कभी–कभी आधुनिकीकरण का प्रयोग अच्छाई या इच्छित परिवर्तन के लिए भी किया जाता है। प्रायः आधुनिकीकरण के आदर्श पश्चिमी देश एवं उनमें होने वाले परिवर्तन रहे हैं। आज के सन्दर्भ में हम कह सकते है कि लोकतंत्र, शिक्षा–प्रणाली और औद्योगिक प्रगति की शुरूआत, प्रायः पश्चिम देशों में ही हुई है। पूँजी को परिणामस्वरूप जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में पश्चिमी समाजों में परिवर्तन लाया है, इन परिवर्तनों के जो अन्य देशों के अनुकरण हुये हैं, उसे ही हम आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के रूप में जानते है। यह बात दूसरी है कि आज चीन, जापान, रूस आदि देश भी अब आधुनिकीकरण के आदर्श रहे हैं। इस संदर्भ में लर्नर का विचार प्रांसगिक लगता है कि पश्चिमी मॉडल केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही पश्चिमी है, लेकिन समाजशात्रीय दृष्टि से विश्वव्यापी है।

**विकास**

विकास एक सामाजिक प्रक्रिया है। विकास का प्रत्यक्ष सम्बन्ध आर्थिक पहलू से होता है। समाजशास्त्रीयों का मत है कि विभिन्न सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति तभी हो सकती है जब समाज का आर्थिक विकास होगा। विकास वह परिवर्तन है जिसके द्वारा उन तत्वों को प्रकाश में लाया जाता है जिसकी समाज को आवश्यकता है। विकास के अन्तर्गत परिवर्तन की निरन्तता के साथ प्रगति की तरफ झुकाव होता है। वास्तव में सामाजिक विकास की आवश्यकता सामाजिक प्रगति की प्राप्ति के लिए आवश्यक होती है।

सामाजिक विकास एक ओर मानव आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के बीच और दूसरी ओर सामाजिक नीतियों और कार्यक्रमों के बीच अच्छा, सामन्जय स्थापित करने के लिए एक नियोजित संस्थात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया है। यह समाज में व्यक्तियों के लिए आर्थिक प्रगति को अच्छी जीवन स्थितियों में परिवर्तित करता है। यह गरीबी, निरक्षरता, अज्ञानता, असमानता, विवेकहीनता तथा समाज में प्रचलित दमन आदि के विरूद्ध एक युद्ध की घोषणा है। इसका उद्देश्य न केवल निर्बलों तथा विशेषाधिकार वंचितों का उत्थान करना है, बल्कि सभी नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारना है। यदि सामाजिक विकास की पूर्वावश्यकता सभी नागरिकों की अपने समाज निर्माण में भागीदारी है, तो लोगों का यह भी विशेषाधिकार है, सामान्य प्रत्यनों में भागीदारी के लाभों का भी वे आनन्द ले।

परिभाषा के रूप में कहा जा सकता है कि विकास वह परिवर्तन है, जिससें कोई समाज सामाजिक प्रगति को प्राप्त करने में सफल हो पाता है। अतः कहा जा सकता हैं की विकास सामाजिक प्रगति का एक साधन भी है। पानसियन ने लिखा है कि विकास संकुचित अर्थ में परिवर्तन है। यह वृद्धि से सम्बन्धित हैं जो पहले से ही किसी वस्तु में गुप्त अवस्था में विद्यमान है। इसी विचारक ने विकास का स्पष्टीकरण करते हुये लिखा है कि विकास का सम्बन्ध सांस्कृतिक संस्थाओं में वृद्धि से है न कि इनके ईजाद से। जिन्सबर्ग ने विकास को परिभाषित करते हुऐ कहा है कि ''विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जो किसी वस्तु में नवीनता पैदा करती है और संक्रमण को निरन्तरता में व्यक्त करती है।''

हॉबहाउस– ने विकास के चार मापदण्डों का उल्लेख किया है– 1. मात्रा में वृद्धि, 2. कारक क्षमता में वृद्धि, 3. आपसी सहयोग, 4. मानवीय स्वतन्त्रता। इस प्रकार विकास से तात्पर्य यह है कि सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ आर्थिक वृद्धि से भी है। विकास = परिवर्तन+आर्थिक वृद्धि है।

पर्यावरणवादियों में मेधा पाटेकर, अरून्धती रॉय, बाबा आम्टे, सुन्दरलाल बहुगुणा जैसे ने कहा है कि विकास को आर्थिक वृद्धि के साथ नहीं जोड़ना चाहिये। उनका कहना है कि विकास वह है जो अधिक से अधिक लोगों को लाभान्वित कर सके और यह लाभ केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए ही नहीं वरन् आने वाली पीढ़ीयों के लिए भी लाभदायक सिद्ध हो सके।

इस प्रकार वास्तविकता यह हैं कि लोगों की जीवन पद्धति में सुधार हो, उनकी वार्षिक आय में वृद्धि हो। पीढ़ीयों को ध्यान में रख कर विकास किया जाये इसमें अधिकाधिक लोगों की भागीदारी हो, विकास को जमीनी विकास से जोड़ा जावे, राज्य गाँवों में रहने वाले लोगों को केन्द्रित करके विकास किया जावे यही एक प्रकार से वास्तविक विकास हैं।

**आधुनिकीकरण एवं विकास का स्वरूप**

सैमुअल पी. हटिंगटन ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में नौ विशेषताओं की पहचान की है। जो उनकी दृष्टि में सामान्यतः सभी अध्ययनकर्त्ता द्वारा स्वीकृत है, ये विशेषताएं विकास की प्रक्रिया के लिए भी समान रूप से लागू होती है। आधुनिकीकरण एवं विकास की प्रक्रिया में निम्नलिखित समानताएं हैं जो इस प्रकार है।

1. आधुनिकीकरण और विकास क्रांतिकारी प्रक्रियाऐं हैं। इसके तकनीकी और सांस्कृतिक परिणाम उतने ही महत्त्वपूर्ण है जितने लोहक्रांति के थे, जिसने खाना बदोश और शिकारी आदमी को कृषक के रूप में स्थापित किया है। अब ग्रामीण कृषि–प्रधान संस्कृतियों को नगर–औद्योगिक संस्कृतियों में बदलने का प्रयास हो रहा है।

2. आधुनिकीकरण और विकास दोनों प्रक्रिया जटिल और बहुआयामी है। संज्ञानात्मक, व्यवहारपरक और संस्थागत परिकार्जन तथा पुनर्रचना की एक श्रृंखला उनके साथ जुड़ी हुई है।
3. दोनों ही अवधारणाएं सर्वांगिक (Systematic) प्रक्रिया है। एक आयाम में परिवर्तन दूसरे आयामों में भी परिवर्तन लाता है।
4. ये व्यापक प्रक्रियाए हैं। अपने उद्भव केन्द्र से उत्पन्न होकर विचार और तकनीकी विश्व के अन्य भागों में फैल जाते है।
5. ये दीर्घकालिक प्रक्रियाऐं हैं। आधुनिकीकरण तथा विकास दोनों में ही समय महत्त्वपूर्ण है। इन्हें तत्काल उत्पन्न करने वाला कोई तरीका ज्ञात नहीं है।
6. ये कई चरणों से सम्बद्ध प्रक्रियाएं हैं। इतिहास बताता है कि आधुनिकीकरण और विकास के लक्ष्यों की दिशा में प्रवृत्ति पहचाने जा सकने वाली चरणों और उपचरणों में घटित होती हैं।
7. ये समरूप बनाने वाली प्रक्रियाएं हैं। आधुनिकीकरण और विकास ज्यों–ज्यों उच्च चरणों पर पहुँचते है, राष्ट्रीय समाजों के बीच अन्तर घटते हैं और अन्तत्तोगत्वा एक स्थिति आती है। जब आधुनिक विचार और संस्थाओं के सार्वभौमिक रूप लागू होते है, जिससे विभिन्न समाज एक ऐसे बिन्दु पर पहुँचते है कि वे इतने एकरूप हो जाते हैं कि विश्व राज्य का निर्माण करने में समर्थ हो जाते हैं।
8. ये दोनों ही ऐसी प्रक्रियाएं हैं जिनका रूख पीछे नहीं मोड़ा जा सकता है। आधुनिकीकरण और विकास में पीछे नहीं जाया जा सकता है, हालाँकी यदा–कदा उथल–पुथल और अस्थायी तौर पर उतार–चढ़ाव आ सकते है।
9. ये प्रगतिशील प्रक्रियाएं है, आधुनिकीकरण और विकास अपरिहार्य और वांछित है। दीर्घकाल में ये मानव की भौतिक और सांस्कृतिक दोनों ही प्रकार की समृद्धि में योगदान करती है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण और विकास की प्रक्रियाए क्रांतिकारी, जटिल प्रणालीपरक, लम्बी और कई चरणों से सम्बद्ध होती है। आधुनिकीकरण और विकास के बीच अन्तर अधिकाधिक धुँधला पड़ता जा रहा है, दोनों एक ऐसे बिन्दु पर पहुँच गये हैं जहाँ दोनों शब्द एक–दूसरे के स्थान पर और लगभग पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त किये जा सकते हैं। आधुनिकीकरण के बौद्धिक इतिहास की जड़े व्यवहार–विज्ञान में है परन्तु यह आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में आर्थिक को महत्त्वूपर्ण परिवर्तन के रूप में ग्रहण नहीं करता है, दूसरी ओर विकास में संस्थागत प्रेरणा के आयाम भी प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से चर्चित हुये है।

### परम्परा एवं आधुनिकता

परम्परा एवं आधुनिकता दोनों ही द्विध्रुवी अवधारणा है। 1950 के दशक के बाद इन अवधारणाओं पर हमारे देश में बड़ी बहसे हुई है। समाजशास्त्र में यह बहस सन् 1960–1980 के दशकों में बड़ी गर्मा–गर्मी से चली। देश के बाहर विदेशों में भी जब आधुनिकीकरण आया तब वहाँ भी इन दोनों परस्पर विरोधी अवधारणाओं पर काफी चर्चा हुई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जब यह निर्णय लिया गया की हम भारत को एक आधुनिक राष्ट्र बनायेंगे, तब पहली बार परम्परा एवं आधुनिकता का विवाद स्पष्ट रूप से हमारे सामने आया। इस विवाद की शुरूआत डी.पी. मुकर्जी ने की। डॉ. योगेन्द्र सिंह कहते हैं कि भारत में परम्परा एवं आधुनिकता को ब्रिटिश उपनिवेशवाद के सन्दर्भ में देखना चाहिये। अंग्रेजी हुकूमत यह चाहती थी कि आम भारतीय जनता में कम से कम सतही रूप से तो यही स्थापित करना चाहिये की यहाँ परम्पराऐं समाज की बहुत महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह कड़िया समाज को एक सूत्र में बॉधे रखती है।

भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में परम्परा के तत्व भी बहुत बड़ी सीमा तक विद्यमान रहे हैं। यही कारण है कि आज यह परम्परा और आधुनिकता के बीच चलने वाली अन्तर्क्रिया का अध्ययन करना अनिवार्य समझ लिया है। समकालिक भारत में एक और कुछ धारणाएं परम्पराओं के रूप में विद्यमान है और इसलिए बहुत से व्यक्ति परम्परागत मूल्यों को बनाये रखने के पक्ष में है। दूसरी ओर दुनिया के अन्य प्रगतिशील देशों की तरह भारत में भी आधुनिकता की लहर उत्पन्न हुयी है। आधुनिकता की इस लहर में परम्परागत मूल्यों, सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक संरचना के क्या शेष रह सकता है ? इस सन्दर्भ में समाजशास्त्रीयों ने भिन्न विचार व्यक्त किये हैं।

डॉ. योगेन्द्र सिंह का कहना है कि यह आवश्यक नहीं की आधुनिकता अनिवार्य रूप से परम्परा को कमजोर ही करती है। यह भी देखा गया है कि कई बार आधुनिकता के हाथों परम्परा अधिक शक्तिशाली भी हो जाती है। उदाहरण के लिए जाति व्यवस्था को लीजिये, इस व्यवस्था को आधुनिकता या प्रजातांत्रिक व्यवस्था ने कानूनी तौर से निषेद्ध कर दिया है। संविधान ने इसके अस्तित्व को समाप्त कर दिया है। यह होते हुये भी आज भारतीय समाज में इस व्यवस्था की भूमिका बड़ी कारगर है। इसका अर्थ यह हुआ हैं कि जाति की परम्परा, आधुनिकता के हाथों कमजोर होने की अपेक्षा ताकतवर हो गयी है। अब रचनात्मक कार्यों को भी छात्रालय छात्रवृत्ति, प्रतिभाखोज आदि– जाति एक केन्द्रिय संस्था बन गई है।

सामान्यतः परम्परागत समाज आधुनिक समाजों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, राजनीतिक, शैक्षणिक इत्यादि क्षेत्रों में अनुसरण करते हैं। इसका हमें यह अर्थ भी नहीं लगाना चाहिऐं कि आधुनिक समाज का परम्पराओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस संदर्भ में शील्स ने अपनी कृति का विचार प्रासंगिक लगता है कि परम्परागत समाज न तो पूर्णतया परम्परागत है और न ही आधुनिक समाज पूर्णतया परम्परामुक्त है। वस्तुतः परम्परा भूत एवं वर्तमान के बीच सदा एक कड़ी का काम करती है। अतः शील्स द्वारा परम्परा एवं आधुनिकता के बीच निरन्तरता का सम्बन्ध मानना प्रासंगिक है। एडवर्ड शिल्स के अनुसार परम्परा या परम्परापरक अभिमुख क्रिया ''परम्परात्मक मानदण्डों का उनकी परम्परात्मक प्रकृति के प्रति जागरूक रहते हुए स्वेच्छा से उनकी निश्चयपूर्वक अभिपुष्टि करना है।'' परम्परात्मक मानदण्ड पवित्र भाव से पुण्य रूप में उदित होते हैं। यदि यह मानदण्ड अतीत की

किसी पवित्र वस्तु से जुड़े हों तो उनके परिवर्तन का अधिक विरोध होगा, अपेक्षाकृत उन मानदण्डों के जिनका आधार पवित्र वस्तु से सम्बन्धित न हो। अतः हम कह सकते हैं कि आज न तो कोई समाज पूर्णतया आधुनिक है और न ही परम्परागत है। यहाँ तक की आज समाज में व्यक्ति परम्परा एवं आधुनिकता को एक साथ अपना कर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सारांशतः परम्परा और आधुनिकता दोनों साथ–साथ प्रयुक्त होने वाली सम्प्रत्यय है।

**निरन्तरता, पहचान और परिवर्तन**

भारत में आधुनिकीकरण का मुकाबला परम्परागत समाजों के साथ हुआ है। वहाँ परम्पराओं ने बराबर अपनी निरन्तरता और पहचान को बनाये रखने के लिए प्रयास किया है। परम्पराएं सहजता से मरती नहीं है। किसी न किसी विकल्प के द्वारा अपनी निरन्तरता को बरकरार रखती है। निरन्तरता यह सम्भव है कि परम्परा का ऊपरी आवरण बदल जाये पर केन्द्रीय व मौलिक मूल्य बराबर बन रहे हैं। इन केन्द्रिय मूल्यों को आन्तरिक मूल्यों (Core Valuesa) कहते हैं। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को हमेशा इन आन्तरिक मूल्यों को साथ जुझना पड़ता है, नहीं तो क्या बात है कि ढेर सारे कानून बन जाने के बाद भी आज स्त्रियों को पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार नहीं मिलता? यह क्या बात है कि स्त्रियों के संवैधानिक सशक्तिकरण के बाद भी उन्हें आये दिन यौन शोषण, हत्या आदि शिकार बनना पड़ता है ? यह क्या बात है कि पंच सितारों की जगमगहाट में भी, पंडित के आदेशों पर सात फेरे लेने पड़ते हैं? उत्तर सही है। निष्कर्ष स्पष्ट हैं कि परम्परा का बहुत बड़ा लक्षण उसकी निरन्तरता और लचीलापन की विशेषता है।

डॉ योगेन्द्र सिंह परम्परा एवं आधुनिकता के मुठभेड़ के विश्लेषण में परम्परा में दूसरा लक्षण पहचान बताते हैं। जब कोई परम्परा अपनी निरन्तरता को बनाये रखने के लिए संघर्ष करती है, तब इसके साथ पहचान भी जुड़ी हुई होती है। यह पहचान समाजीकरण की ऐजेन्सियों द्वारा बनाये रखी जाती है। व्यक्ति का बुनियादी व्यक्तित्व इसी पहचान का प्रमाण है। इस पहचान को नजर अन्दाज करना बड़ा कठिन होता है। हम देखते हैं कि आधुनिकीकरण के तत्व परम्परागत समाज का ऊपर से बदल देते हैं, लेकिन परम्परा के आन्तरिक मूल्य जरा भी नहीं बदलते है। आधुनिकीकरण जिस तरह के सामाजिक परिवर्तन को लाना चाहता है, उसका निकटतम सम्बन्ध उत्पादन विधियॉ और सूचना तकनीकी तंत्र से होता है। परम्पराओं के परिवर्तन में सतही और आन्तरिक परिवर्तन महत्त्वपूर्ण मसला है।

**आधुनिकीकरण का सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था पर प्रभाव**

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय समाज में बहुत बड़े परिवर्तन आये हैं और सन् 1991 के बाद वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण के कारण जो परिवर्तन आया है, उसके बहुत बड़े परिणाम भारतीय समाज पर पड़े हैं। संरचनात्मक परिवर्तन को सरकार की अर्थ नीति बनने के कारण बाजार तथा विदेशी निवेश इस देश की जमीनी हकीकत बन गये हैं। इस नई आर्थिक नीति के कारण महॅगाई तेजी से बढ़ गयी है, निर्यात–वृद्धि की दर कम हुई है और आयात लगातार बढ़ रहा है। वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण ने सामाजिक विकास के उद्देश्यों जैसे गरीबी हटाने, रोजगार में वृद्धि करने, सामाजिक सेवाऐं बढ़ाने पर विपरित प्रभाव पड़ा है। आधुनिकीकरण के द्वारा पैदा किया गया इस परिवर्तन में जनसंचार की भूमिका बहुत शक्तिशाली है, जिसे हम आधुनिक समाज कहते हैं। मीडिया के कारण आज गॉंव एक विश्व बन गया है और विश्व एक गॉंव बन गया है। प्रिन्ट मीडिया में समाचार–पत्र, पुस्तकें, पत्र–व्यवहार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीविजन, कम्प्यूटर, रेडियो, ट्रॉजिस्टर, डिजिटल, सेल्यूलर फोन, फैक्स मशीन आदि सम्मिलित है। मीडिया के इन माध्यमों ने भौगोलिक दूरियों को समेट लिया है।

प्रो. योगेन्द्र सिंह ने आधुनिकता का भारतीय परम्पराओं का पर क्या प्रभाव पड़ता है? इसका सैद्धान्तिक विश्लेषण किया है। वे यह मानकर चलते हैं कि आधुनिकीकरण एक सार्वभौमिक सांस्कृतिक प्रघटना है। यह प्रघटना केवल भारत की हो, ऐसा नहीं है। आज सम्पूर्ण दुनियॉ एक आधुनिक समाज है। इस दृष्टि से आधुनिकता एक सांस्कृतिक–सार्वभौमिकता है। डॉ. योगेन्द्र सिंह ने यह भी कहा है कि आर्थिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों के अतिरिक्त आधुनिकीकरण ने सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है।

आधुनिकीकरण का आशय समाजों की सामाजिक संरचना में कुछ विशिष्ट स्वरूपों के परिवर्तन से है। सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्थाओं में ये परिवर्तन आधुनिकीकरण के सहवर्ती मानदण्डों (Concomitant Norms) पर आधारित नई भूमिकाओं तथा समूह संरचनाओं के विकास एवं संचयीकरण में योगदान देते हैं। यह प्रक्रिया संचयी रूप से समाज के संरचनात्मक आधुनिकीकरण का कारण बनती है। विवाह, परिवार, धर्म, शिक्षा, राजनीति, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सामाजिक संस्थाओं में संरचनात्मक परिवर्तन अनन्तकाल से चले आ रहे है। इन परिवर्तनों में से अधिकांश परिवर्तन चक्रिय सिद्धान्त पर आधारित है। कुछ परिवर्तन उद्विकासीय, संघर्ष, प्रकार्यात्मक सिद्धान्त के द्वारा होते हैं। सामाजिक संरचनाएं अस्तित्व में आती या विलुप्त हो जाती थी, स्वरूप में बढ़ती या घटती रहती थी, परन्तु वे प्रकार्यात्मक रूप से स्थिर या जुड़ी रहती थी। जो भी विशेषीकरण था उसका आशय 'किसी ठोस गतिविधि' से होता था न की सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण पक्ष से, जैसा की अर्थसंरचनात्मक आधुनिकीकरण का होता है।

समाज में संरचनात्मक परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में सम्पूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन है। उदाहरण के लिए जागीरों के मध्य विशिष्टीकृत सम्बन्धों पर आधारित सामन्ती सामाजिक संगठन के वर्ग एवं फैक्ट्री व्यवस्था पर आधारित औद्योगिक सामाजिक संगठन में रूपान्तरण, काम एवं व्यवसाय का व्यवसायीकरण तथा प्रभुता एवं नेतृत्व संरचना का लोकतांत्रिकरण समाज में संरचनात्मक परिवर्तन का सूचक है। यूरोपिय समाज में औद्योगिक क्रांति द्वारा इस प्रकार के परिवर्तन लाये गये

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

है। सामाजिक व्यवस्था में जिस प्रक्रिया के माध्यम से संरचनात्मक परिवर्तन आये हैं, वह भूमिकाओं का विभेदीकरण है। भूमिकाओं के विभेदीकरण का परिणाम संरचनात्मक विभेदीकरण में होता है। संरचनात्मक विभेदीकरण का प्रारूप परिवर्तन का एक अमूर्त सि्द्धान्त भी है। जब बदलती हुई ऐतिहासिक परिस्थितियां में एक सामाजिक भूमिका अथवा संगठन पुराना हो जाता है, घटनाओं की निश्चित तथा विशेष शृंखला द्वारा यह दो अथवा अधिक भूमिकाओं या संगठनों में विभेदीकरण करता है जो नयी ऐतिहासिक परिस्थितियों में अधिक प्रभावशाली तरीके से कार्य करती है और अन्ततः सामाजिक व्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन लाती है। विभेदीकरण के माध्यम से उदित होने वाली नई सामाजिक इकाईयॉ संरचनात्मक रूप से भिन्न होती है। परन्तु प्रकार्यात्मक रूप से उस संरचना के समतुल्य होती है, जिसे इन्होंने विस्थापित किया है। यकीनन प्रकार्यात्मक विशेषीकरण की प्रक्रिया के पश्चात् संरचनात्मक विभेदीकरण होता है। उदाहरण के लिए पारस्परिक संयुक्त परिवार न केवल प्रजनन तथा समाज हेतु नये सदस्यों के समाजीकरण के एक अभिकरण के रूप में कार्यशील होता था, अपितु यह अन्य क्षेत्रों जैसे व्यवसाय, शिक्षा, अवकाश एवं मनोरंजन आदि में कर्त्तव्य निभाता है, जिन्हें की विशेषीकृत अभिकरण कहते हैं। नगरीकरण, औद्योगिकृत समाजों में नाभिक परिवार, जोकि संयुक्त परिवार से विभेदीकृत हुआ था प्रकार्यात्मक रूप से विशिष्ट है न की पारस्परिक परिवार की भॉति प्रकार्यात्मक रूप से बहुल। आधुनिकीकरण ने समाज में श्रम विभाजन की प्रकार्यात्मक तथा विशेषीकरण की उच्च श्रेणी को उत्पन्न किया है। दुर्खीम के अनुसार यह 'यांत्रिक' से 'सावयवी' प्रकार की एकता अथवा समाज की संरचनात्मक परिवर्तन का द्योतक है।

पश्चिम के अपेक्षाकृत आधुनिकृत समाजों में मूल्यों तथा अभिप्रेरणा के एक क्रमिक किन्तु सहज उफान ने आधुनिकीकरण की आधारशिला रखी है। आधुनिकीकरण की सांस्कृतिक शक्तियॅा, संरचनात्मक विभेदीकरण तथा अनुकूलन की गति के प्रति अधिक अभ्यस्त थी। भारत में संयुक्त परिवार का टूटना तथा नगरीकरण, शिक्षा का प्रसार एवं आधुनिक फैक्ट्रीयों का उदय संयोग से लगभग एक ही समय में साथ–साथ हुआ। संस्कृति एवं सामाजिक संरचना के क्षेत्रों के साथ–साथ सामान्यतया समाज के केन्द्रिय तथा परिधि के क्षेत्र में परिवर्तन निरन्तर एवं समरूप थे। आधुनिकीकरण टूटने की समस्याओं से उस हद तक ग्रस्त नहीं था जैसा कि एशिया, अफ्रिका व लैटिन अमेरिका के नए देशों में हो रहा था। इन समाजों में सांस्कृतिक एवं संरचनात्मक स्वरूपों में आधुनिकीकरण व्यवस्था बाह्य जनित है तथा अधिकांशतया औपनिवेशिक टकरावों के माध्यम से ऐतिहासिक वृद्धि की प्रघटना को निर्मित करती है।

इन समाजों में इन परिस्थितियों में प्रायः आधुनिकीकरण प्रभावों के सांस्कृतिक व सामाजिक संरचनात्मक स्वरूपों के मध्य एक विलम्बन होता है। आधुनिकीकरण के वे समाजीकरण जो पाश्चात्य समाज में विश्वसनिय सिद्ध हुए हैं, नए राष्ट्रों की सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करने में असफल रहे हैं। आभासी तौर पर इन समाजों में आधुनिक सामाजिक संरचनाऐं, प्रकार्यों के संदर्भ में आधुनिकीकरण के उद्देश्यों को हो सकता है, आंशिक रूप से ही पूरा करें,जबकि हो सकता है कि आंशिक रूप से वे परम्परागत भूमिका,संरचनाओं तथा सामाजिक कर्त्तव्यों के स्वरूपों को सुदृढ़ कर रही है। अतः गाँवों में संरचनात्मक परिर्वतनों के हमारे अध्ययन में यह आवश्यक हो जाता है कि अनुकूलन की इन दोनों दिशाओं के संदर्भ में हम सामाजिक संरचना के परिणाम तथा अन्तर्सम्बन्धों पर विशेष ध्यान दिया है।

**आधुनिकीकरण का मूल्यों पर प्रभाव**

वास्तव में भारतीय ग्रामीण समुदाय में आधुनिकता का प्रभाव ब्रिटिश शासनकाल से ही होना प्रारम्भ हो गया था परन्तु सम्पूर्ण भारत में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया का प्रभाव समान रूप से न होने के कारण आज आधुनिकता का प्रभाव भी विभिन्न ग्रामों और विभिन्न वर्गों एवं जातियों में देखने को मिलता है। स्वतन्त्र भारत में वयस्क मताधिकार के द्वारा स्थापित संसदीय जनतंत्र, समाजवादी व्यवस्था सामन्ती सुविधाओं का उन्मूलन, पंचायतीराज–व्यवस्था की स्थापना तथा पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत विकास कार्योक्रमों का क्रियान्वयन आदि आधुनिकीकरण के विशेष वाहक है। जिन्होंने ग्रामीण जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करना आरम्भ कर दिया है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

शोध में वैज्ञानिक प्रविधियों के द्वारा विषय से सम्बन्धित सामाजिक जीवन, सामाजिक घटनाओं, प्रकार्यात्मक सम्बन्धों, कार्य–कारणता के बारे में नवीन ज्ञान प्राप्त करना है। इस शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैः

1. आधुनिकीकरण एवं सामाजिक विकास की धारणाओं को मालुम किया है।
2. समाज में आधुनिकीकरण की प्रकिया को किन–किन क्षेत्रों में स्वीकारा एवं अस्वीकारा है तथा साथ ही यह ज्ञात करना।
3. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को लोग अपना रहे है, तो इससे परिवर्तन एवं विकास हुआ है या नहीं हुआ है।
4. आधुनिकीकरण का कृषि व्यवस्था, संस्कृति, परिवार, विवाह एवं जाति व्यवस्था आदि पर क्या प्रभाव पड़ा है ?
5. आर्थिक विकास में आधुनिकीकरण की क्या भूमिका है जैसे आदि तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है।
6. विवाह एवं परिवार के बदलते प्रतिमानों का अध्ययन करना है।
7. आधुनिकारण से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी प्रकार के पहलुओं में परिवर्तन उत्पन्न हुआ को मालुम करना।
7. आधुनिकीकरण से समाज में डिजिटल विलेज की संकल्पना को मूर्तरूप मिल पाया है या नही के बारे में जानकारी मालुम करना।
8. आधुनिकीकरण से समाज में विकास उत्पन्न हुआ है। इससे विभिन्न सामाजिक कुरीतियॉ कमजोर होने लगी है आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना है।

निष्कर्ष

पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिए किये गये प्रयत्नों से गाँवों में अनेक संरचनात्मक परिवर्तन होने लगे हैं। इस समय यातायात के साधनों का विकास, नई सड़कों का निर्माण, रेडियो, समाचार यंत्रों तथा संचार के नये साधनों का प्रसार होने तथा नवीन शिक्षा संस्थाओं में वृद्धि होने एवं स्मार्ट फोन क्रांति से गाँवों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला है। इसके परिणामस्वरूप गाँवों में खान–पान के क्षेत्र में अनेक आधुनिक वस्तुओं का उपयोग करने लगे हैं। खाने–पीने के बर्तन भी पहले जैसे नहीं रहे हैं, बल्कि गाँवों में स्टील एवं चीनी के बर्तनों का बहुत उपयोग किया जाने लगा है। आज पुरूष और स्त्रियों की वेश–भूषा में अधिकता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। साईकिल, मोटर, स्कूटर, कूलर, घडी, टी.वी., वी.सी.डी. रेडियो, ट्रॉंजिस्टर इत्यादि गाँवों में लोकप्रिय बन गये हैं। गाँवों में स्त्रियॉ पूर्णतया परम्परागत है, लेकिन घर के बाहर उनके जीवन के आधुनिकता के लक्षण स्पष्ट होने लगे हैं। घर के अन्दर भी अब गैस चूल्हा, स्टोव, बिलजी का पंखा, प्रेसर कुकर और सौन्दर्य–प्रसाधन आदि आधुनिक वस्तुए उपयोग में लायी जाने लगी है। परिणामस्वरूव गाँवों की जीवन शैली, मूल्यों जिसमें खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा एवं सामाजिक मूल्यों, धर्म, जाति, संस्कार आदि में परिवर्तन उत्पन्न किया है। गाँवों में आधुनिक वस्तुएं मिलने लगी है। जिससे लोगों की जीवन शैली के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन उत्पन्न हुआ है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ**

1. *आईजेनस्टॉड, एस.एन. ; मॉडर्नाईजेशन : प्रोटेस्ट एण्ड चेन्ज, प्रिन्टिस–हॉल, ऑफ इण्डिया, न्यू देहली, 1969,*
2. *गौरे, एम.एस. ; एज्युकेशन एण्ड मॉडर्नाईजेशन इन इण्डिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1982,*
3. *एलाटस, सैयद हुसैन ; मॉडर्नाईजेशन एण्ड सोशल चेन्ज, अंगस एण्ड रॉबर्टशन, क्रिमोरेने, सिडनी, आस्ट्रेलिया, 1972,*
4. *ड्यूच, कार्ल, डब्ल्यू. ; सोशल मॉबीलाईजेशन एण्ड पॉलिटिकल डवलपमेन्ट, अमेरिकन पॉलिटिकल साइन्स रिव्यू, सितम्बर 1961, वॉल्यूम 3,*
5. *पाई, ए.ई. ; टुवर्ड्स ए कम्यूनिकेशन थ्योरी ऑफ मॉडर्नाईजेशन, ओरियंट लौंग मैन, बॉम्बे, 1969*
6. *जेम्स, ओ कॉनल, ; कन्सेप्ट ऑफ मॉडर्नाईजेशन, साऊथ एटलांटिक क्वार्टर्ली, 1965,*
7. *गिडेन्स एन्थोनी ; (क्वोटेड बाई) दोषी, एस.एल., आधुनिक, उत्तरआधुनिकता एवं नवसमाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, (रिप्रिंटेड), 2005,*
8. *सिंह, योगेन्द्र ; एसेज ऑन मॉडर्नाईजेशन इन इण्डिया, मनोहर बुक सर्विस, नई दिल्ली, 1978,*
9. *दुबे, एस.सी. ; मॉडर्नाईजेशन एण्ड एज्यूकेशन, विस्तार पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1988, (क्वोटेड बाई ए.आर. देसाई)*
10. *श्रीनिवास, एम.एन. ; सोशल चेन्ज इन मॉडर्न इण्डिया, ऑरियन्ट लोंगमेन लिमिटेड, नई दिल्ली, 1977,*
11. *लर्नर, डेनियल ; दी पासिंग ॲवे ऑफ ट्रेडिशनल सोसायटी, फ्री प्रेस, न्यूयॉर्क, 1958,*
12. *जिन्सबर्ग ; सोश्योलॉजी, थोर्नटन बटरवर्थ, लन्दन, 1937,*
13. *हॉबहाउस ; सोशल डवलपमेन्ट, हेनरी हॉल्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयॉर्क, 1966,*
14. *हटिंगटन, सैमुअल, पी. ; दी चेन्ज टु चेन्ज : मॉडर्नाईजेशन, डवलपमेन्ट एण्ड पॉलटिक्स, इन सिरील ई. ब्लेक (ईडी), कम्पेरेटिव मॉडर्नाईजेशन, आईबीआईडी,*
15. *सिंह, योगेन्द्र ; भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण (हिन्दी अनुवाद, ए.के. अग्रवाल), रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2006,*
16. *मरियन, जे, लेवी ; मॉडनाईजेशन इन दी स्ट्रेक्चर ऑफ सोसायटी, प्रिन्सटन युनिवर्सिटी प्रेस, न्यूजर्सी, 1966, वॉल्यूम 1,*